बच्चे, नागरिकता और कविता

समीना मिश्रा

हाल ही में एक दोस्त ने बताया कि किस तरह से हर सुबह अखबार पढ़ने के बाद किसी अनहोनी की आशंका से उसे बोझिल-सा महसूस होने लगता है और उसने मुझसे पूछा कि मैं आज के इस निराशा भरे दौर का सामना कैसे कर रही हूँ। उसका यह सवाल सुनकर मैं अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के बारे में सोचने लगी, जिसकी बदौलत मैं विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों के बच्चों की ज़िन्दगियों से रूबरू हो पाती हूँ।

पिछले आठ महीनों में, मैं भारत की तीन अलग-अलग जगहों में रही, जिस दौरान मैंने नागरिकता के बारे में बच्चों के विचारों को जानने-समझने के लिए उनसे सघन बातचीत की। इनमें से कई बच्चे अभावों में जीवन बिताते हैं। उनके घर ऐसे इलाकों में हैं जहाँ बुनियादी सुविधाओं का अभाव है, उनके स्कूलों में सीमित संसाधन हैं, उन्हें भीड़-भाड़ वाली जगहों के बीच में ही खेलने के लिए जगह बनानी पड़ती है, और वे टीवी और फोन पर जो कुछ भी देखते हैं, उसमें से ज़्यादातर उनकी पहुँच से बाहर होता है। उनकी और मेरी दुनिया में ज़मीन-आसमान का फर्क है क्योंकि मैं विशेषाधिकार प्राप्त हूँ। इस दमनकारी दुनिया में लोग प्रतिदिन जिस किस्म के संघर्षों का सामना करते हैं, मैं वैसे संघर्षों से अछूती हूँ।

तो फिर आज़ादी के 75वें साल में उनसे स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के बारे में पूछने का मेरे जैसे विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति के लिए क्या मतलब है? लतामणि कहती हैं कि "हम अपने बारे में जो कहानियाँ सुनाते हैं, उनसे हमारी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पता चलती है।" मुझे यह उम्मीद है कि बच्चों और नागरिकता पर आधारित प्रोजेक्ट 'हम हिन्दुस्तानी' के माध्यम से मैं ऐसी कहानियाँ सामने ला सकूँगी, जो हमारे बीच की भिन्नताओं एवं विविधताओं को समझने और स्वीकार करने के साथ-साथ उनसे ऊपर उठने में भी मददगार साबित हों, ताकि हम उन मूल्यों को याद कर सकें जो हमें एकजुट करते हैं। हम यह समझ सकें कि चूँकि आज़ादी वाले दिन स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का वादा हम सभी से किया गया था, इनकी माँग करना हमारा हक है; और यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम एक ऐसी दुनिया बनाएँ, जिसमें इन समस्त मूल्यों का सम्मान किया जाता हो।

रचनात्मक गतिविधियाँ

मैं बच्चों के साथ जो भी गतिविधियाँ करती हूँ, उनमें से ज़्यादातर रचनात्मक गतिविधियाँ होती हैं, जिसमें वे न सिर्फ अपनी कलात्मक रचनाओं को साझा करते हैं, बल्कि एकसाथ मिलकर बहुत कुछ बनाते भी हैं। चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक, किसी भी तरीके से कक्षा में कलाओं को शामिल करने से बच्चों को अपनी दुनिया को एक अलग नज़रिये से देखने का प्रोत्साहन मिलता है, कुछ इस तरह से जैसे उन्होंने पहले कभी नहीं देखा। कलाओं के माध्यम से वे खुद को अभिव्यक्त भी कर पाते हैं - उन्हें अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का प्रोत्साहन मिलता है और इस पूरी प्रक्रिया से उन्हें अपनी ज़िन्दगी और अपनी दुनिया को समझने में मदद मिलती है।

माइकेल बोनेट और स्टीफन क्यूपर्स जैसे विद्वान कहते हैं, "अपने विचारों को उनके वास्तविक रूप में या कल्पना के माध्यम से व्यक्त करके और उनके बारे में दुनिया की प्रतिक्रिया महसूस करके ही हम अपने विचारों के वास्तविक मायने समझ सकते हैं और अपने आसपास की दुनिया को समझ सकते हैं।" कला के साथ जुड़कर ही बच्चे खुद को और अपने आसपास के परिवेश को समझ पाते हैं। इससे उन्हें कला के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त करने और अपनी पहचान के नए पहलुओं को विकसित करने का अवसर मिलता है। जिस तरह इस निबन्ध को लिखने

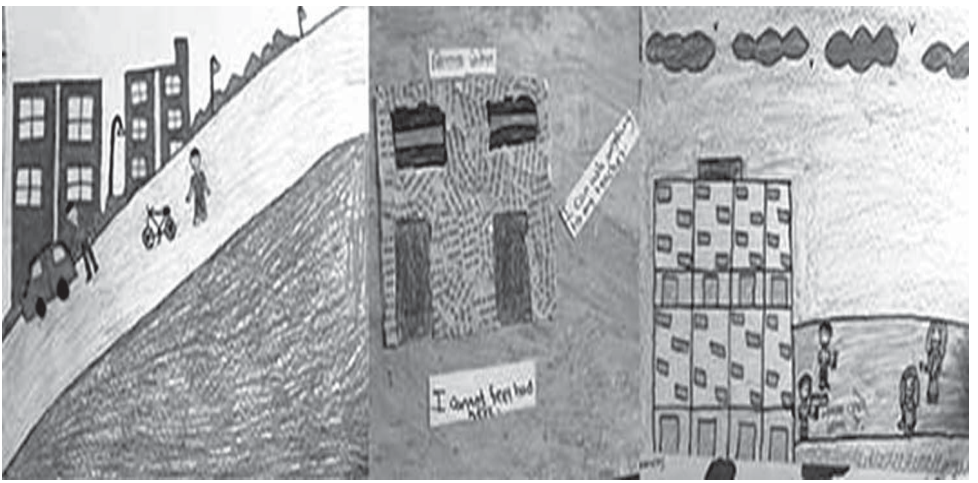

चित्र-1: *रचनात्मक गतिविधियों के दौरान बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र।*

के दौरान मैं अपनी अभिव्यक्तियों को स्पष्ट करती जा रही हूँ और अपने विचारों की ज़िम्मेदारी ले रही हूँ, ठीक उसी तरह, रचनात्मक गतिविधियाँ बच्चों को दुनिया के साथ एक रिश्ता बनाने और उसके प्रति ज़िम्मेदारी की भावना विकसित करने का अवसर देती हैं। बच्चों के साथ बातचीत के दौरान यह बात मुझे बार-बार स्पष्ट होती गई।

यह लेख बच्चों के साथ मेरे काम पर आधारित है। इसके तहत बच्चे लिखित सामग्री, चित्र और ध्वनि का इस्तेमाल करके एकसाथ मिलकर रचनात्मक कार्य करते हैं। 'हम हिन्दुस्तानी' नाम की इस परियोजना में बच्चों के साथ कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं, जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के विचारों के इर्द-गिर्द केन्द्रित होती हैं। इनमें समूह चर्चाओं के द्वारा बच्चों को विविध विषयों पर रचनात्मक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस लेख में मैं ऐसी ही एक बातचीत पर ध्यान केन्द्रित करूँगी, जिसके फलस्वरूप दो किशोर लड़कियों ने 'मेरे लोग' कविता लिखी।

नटवर पारेख कम्पाउण्ड, गोवंडी

नटवर पारेख कम्पाउण्ड (एनपीसी) गोवंडी इलाके में ऊँची इमारतों का एक समूह है। इन्हें 2007 में मलिन बस्ती पुनर्वास प्राधिकरण की पहल के तहत मुम्बई के विभिन्न हिस्सों में झुग्गी और फुटपाथ पर रहनेवालों को औपचारिक आवास प्रदान करने के उद्देश्य से बनाया गया था। शहरभर की विभिन्न शहरी आधारभूत संरचनाओं को हरी झण्डी दिखाते हुए 10 से भी ज़्यादा अलग-अलग जगहों के लोगों को यहाँ स्थानान्तरित किया गया था। 25,000 से भी ज़्यादा निवासियों के साथ, 5 हेक्टेयर का यह क्षेत्र दक्षिण एशिया के सबसे ज़्यादा घनी आबादी वाले शहरी क्षेत्रों में से एक है, जहाँ हरेक व्यक्ति के लिए केवल 1.9 मीटर की सीमित जगह उपलब्ध है (कम्युनिटी डिज़ाइन एजेंसी के आँकड़ों के अनुसार)।

एनपीसी के कई रहवासी स्थानीय निवासी हैं लेकिन कई ऐसे भी हैं, जो किराएदार हैं। हरेक इमारत में बाथरूम, पाइप से पानी का कनेक्शन और लिफ्ट का होना – यहाँ रहने आने वालों में से अधिकांश के लिए आकर्षण की वजह थे, लेकिन सच्चाई यह है कि बुनियादी सुविधाओं से जुड़ी हुई अधिकतर समस्याएँ बरकरार हैं। इमारतों के बीच की गलियों में सालों पुराना कचरे का ढेर लगा हुआ है, जल निकासी के क्षतिग्रस्त पाइपों से निकलकर गन्दा पानी सड़कों पर लगातार बहता रहता है, और गली की बत्तियों का क्षतिग्रस्त होकर बन्द हो जाना आम बात है। कम्युनिटी डिज़ाइन एजेंसी द्वारा एक पुनरुद्धार परियोजना के

चित्र-2: *गोवंडी इलाके में स्थित नटवर पारेख कम्पाउण्ड में इमारतों के बीच की गलियों में कचरे का ढेर।*

तहत इनमें से ज़्यादातर समस्याओं के समाधान की दिशा में काम किया जा रहा है। यह संस्था 2016 से इस जगह पर काम कर रही है। इस इलाके की समस्याओं के समाधान के लिए यहाँ के निवासियों के साथ मिलकर की गई पहलों में से एक, बच्चों के लिए 'किताब महल' नाम के एक पुस्तकालय की स्थापना है। पुस्तकालय की परिकल्पना समुदाय की भागीदारी को बढ़ाने के लिए एक उत्प्रेरक के तौर पर और बच्चों के लिए सीखने की एक जगह निर्मित करने के उद्देश्य से की गई, खासकर महामारी के दौरान, जब उनके सँकरे घरों में ऑनलाइन सीखना मुश्किल होता था।

किताब महल में मैंने नगरपालिका के और निजी स्कूलों में पढ़ने वाले 8 दलित बच्चों और 5 मुस्लिम बच्चों, यानी कुल 13 बच्चों के साथ लेखन और कला से सम्बन्धित कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला में आनेवाले मुस्लिम बच्चे अंसारी जाति के थे, जिसे अन्य पिछड़ा वर्ग माना जाता है। इनमें से दो बच्चे स्कूल नहीं जाते थे, क्योंकि उनके परिवार महामारी के दौरान एनपीसी में आए थे और उनके माता-पिता को उनके पिछले नगरपालिका स्कूल से स्थानान्तरण प्रमाणपत्र अब तक नहीं मिला था। कचरा बीनकर दिहाड़ी मज़दूरी करने की वजह से माता-पिता के लिए स्थानान्तरण प्रमाणपत्र हासिल करने के लिए और अधिक कोशिश करने का समय नहीं था। नतीजतन, इस कार्यशाला तक वे दोनों लड़के स्कूल में नामांकित नहीं हुए थे।

धर्म, जाति और वर्ग के अनुभव

S और K, दो लड़कियाँ जिनकी कविताएँ इस निबन्ध का केन्द्र-बिन्दु हैं, 14 साल की हैं और जिस वक्त यह कार्यशाला आयोजित हुई, उस वक्त उन्होंने नगरपालिका के स्कूलों में आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई पूरी ही की थी। दोनों को अपने स्कूल पसन्द थे, हालाँकि, उन्होंने बताया कि महामारी के दौरान दो साल की ऑनलाइन पढ़ाई उनके लिए मुश्किल थी और उस दौरान वे बहुत कम सीख पाई थीं। उनका कम सीख पाना, उनके लिखने के कौशलों में नज़र आ रहा था - उन्होंने सरल-से शब्दों को लिखने के लिए भी मदद माँगी। S महाराष्ट्र के एक दलित परिवार से सम्बद्ध है और एनपीसी आने से पहले वह पोवई, मुम्बई में रहती थी।

K का परिवार उत्तर प्रदेश का रहनेवाला है, वह भी दलित है। महामारी के दौरान उसने कई महीने अपने गाँव में बिताए। वह मुम्बई तभी लौट सकी जब उसके पिता मुम्बई में अपना काम फिर से शुरू कर सके। दोनों के परिवार कई सालों से एनपीसी में रह रहे हैं।

दोनों ही लड़कियाँ शान्त और शर्मीली थीं, बोलने के लिए उन्हें बहुत प्रोत्साहित करना पड़ता था। दोनों नियमित पुस्तकालय आती थीं और S वॉलन्टियर के तौर पर छोटे बच्चों को कहानियाँ भी पढ़कर सुनाती थी। अलग से बातचीत के दौरान दोनों ने अपनी जातिगत पहचान के बारे में जागरूकता दर्शाई - उन्होंने 'निम्न जाति' या 'छोटी जाति' का होने की बात कही। K ने खुद के हिन्दू होने और हिन्दुओं में जातियों के होने की बात कही। "हम जायसवाल हैं..." उसने कहा, "मुझे ठीक-ठीक तो नहीं पता, लेकिन लोग हमें शायद चमार कहते हैं, है न? इस तरह इसे वे छोटी जाति, निम्न जाति कहते हैं।" जिस ढंग से उन्होंने जाति के बारे में बताया, उससे यह ज़ाहिर हो रहा था कि धर्म, जाति और वर्ग के अनुभव आपस में कितने घुले-मिले होते हैं।

"जाति का मतलब है, अलग-अलग धर्म, अलग-अलग समुदाय," S ने जारी रखा, "जाति का मतलब है अलग-अलग धर्म, जैसे जय भीम, मराठा, ईसाई। जय भीम और मराठा लोग बहुत अलग होते हैं। मतलब जय भीम और मराठा, दोनों अलग जातियाँ हैं। मराठा लोग हर किसी को स्वीकार नहीं करते, वे जय भीम वाले लोगों को भी स्वीकार नहीं करते।" K ने उन परिवारों के बारे में भी बताया, जो उससे अच्छे से बात करते थे और उनके बारे में भी जो उससे अच्छे से बात नहीं करते थे। लेकिन उसके अनुसार कुछ परिवारों के अच्छे से बात करने की वजह साझी पहचान की गलतफहमी थी। उसने बताया, "क्योंकि वे लोग भी

चित्र-3: *अम्बेडकर जयन्ती के दिन एनपीसी के लोग भरपूर जीवन्तता और ऊर्जा से जगह-जगह बुद्ध एवं अम्बेडकर की मूर्तियाँ रखकर उन्हें हार-मालाएँ पहनाते हैं और प्रार्थना करते हैं।*

हिन्दू हैं और यह सोचते हैं कि वे हमारे जैसे हैं।"

दोनों ही लड़कियाँ अम्बेडकर के बारे में जानती थीं। वे जानती थीं कि वे संविधान के निर्माता थे और संविधान ने ही जातिगत भेदभावों को खत्म किया। उनके समुदाय में उन्हें लगभग भगवान का दर्जा दिया गया था और उनके जन्मदिन पर औपचारिक ढंग से पूजा वगैरह की जाती थी। मैंने पाया कि 14 अप्रैल के दिन अम्बेडकर जयन्ती के लिए एनपीसी जीवन्तता और ऊर्जा से भरपूर है – सजावटी बत्तियाँ और पोस्टर लगाए गए हैं और जगह-जगह बुद्ध और अम्बेडकर की मूर्तियाँ रखकर उन्हें हार-मालाएँ पहनाई गई हैं। दलित प्रतिरोध को दर्शाने के लिए लोग बत्तियों से सजे हुए नीले रंग के ट्रकों पर सवार होकर नज़दीक के इलाकों में जाते हैं। नीला रंग दलितों के प्रतिरोध को दर्शाता है। ट्रकों पर लाउडस्पीकर लगाकर अम्बेडकर और दलितों की एकता के बारे में जाने-माने मराठी गाने बजते रहते हैं और लोग एकसाथ मिलकर नाचते हैं। मुम्बई के पास के इलाके चेम्बूर में अम्बेडकर गार्डन में लगाई गई अम्बेडकर की प्रतिमा को सम्मान प्रदर्शित करने के इन्तज़ार में लोगों की लम्बी लाइनें लगी हुई हैं। एनपीसी में रहने वाले परिवार वहाँ और शिवाजी पार्क जाते हैं, इन दोनों ही जगहों पर एक विशाल उत्सव आयोजित किया जाता है। S ने बताया कि बहुत-से अन्य लोगों की तरह ही वह भी 14 अप्रैल के दिन नीले और सफेद रंग के कपड़े पहनती है और

इस खास मौके पर उसके घर में खीर बनती है। K मुझे एनपीसी की इमारतों के बीच चौराहे पर स्थित अम्बेडकर की प्रतिमा के पास ले गई और उसने वहाँ कुछ इस अन्दाज़ में प्रार्थना की, जैसे कोई मन्दिर में करता है। "आज इनका जन्मदिन है और इन्होंने ही हमारे भारत के लिए संविधान लिखा। और धर्म, खासकर हमारे हिन्दू धर्म में कई जातियाँ हैं, जिन्हें हर कोई अस्पृश्य मानता है और इसी वजह से बाबासाहेब ने संविधान लिखा," उसने मुझसे कहा।

हालाँकि, संविधान और इसके द्वारा प्रदत्त अधिकारों के बारे में उनकी जानकारी अस्पष्ट थी। उदाहरण के लिए, S ने कहा, "इस देश में मुझे कुछ भी अधिकार नहीं है..." उसकी बात में बम्बई जैसे बड़े शहर में मौजूद वर्ग-असमानता साफ

मेरे लोग (K)

वह लोग जो इंडिया में रहते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?
वह लोग जो पाकिस्तान के लिए लड़ते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?

वह बच्चे जो मेरे साथ क्लास में बैठते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?
वह टीचर जो क्लास के बच्चों से गुस्से से बात करते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?

वह फेमिली के लोग जो मेरे साथ रहते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?
वह मामा जो फेमिली से लड़ते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?

वह नानी के गाँव के लोग जो कहते हैं -
"नदी में पानी ज़्यादा है, वहाँ मत जाओ।"
क्या वह मेरे लोग हैं?
वह दुकानवाले जो लड़कियों को गन्दी नज़र से देखते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?

वह लोग जो दुनिया के पर्यावरण को बचाना चाहते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?
वह लोग जो धरम पर लड़ाई करते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?

चित्र-4: *K द्वारा रची गई कविता।*

मेरे लोग (S)

वह दोस्त जो मुसीबत में साथ देते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?
वह पड़ोसी जो छोटी-छोटी बात पर लड़ते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?

वह फैमिली के लोग जिन्होंने मेरी बहन की शादी के लिए पैसे दिए थे
क्या वह मेरे लोग हैं?
वह नानी जो मुझ पर शक करती है
क्या वह मेरे लोग हैं?

वह किताब महल लाइब्रेरी के लोग जो मुझे हर चीज़ में चांस देते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?

वह लोग जो ताज होटल के अन्दर जाते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?

वह टीचर जो मेरी बात सुनते हैं और मुझे समझते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?
वह पुलिसवाले जो अमीर का पैसा लेकर गरीब पर इलज़ाम लगाते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?

वह पवई के चाल के लोग जो मेरे साथ 14 अप्रैल को अंबेडकर जयंती मनाते थे
क्या वह मेरे लोग हैं?
वह लोग जो मस्जिद तोड़ते हैं
क्या वह मेरे लोग हैं?

चित्र-5: *S द्वारा रचित कविता।*

झलक रही थी, जहाँ न सिर्फ उस जैसे लोगों की पहुँच से बाहर पाँच सितारा होटलों में वर्ग असमानताएँ साफ झलकती हैं, बल्कि एनपीसी के भी कुछ परिवार बाकी परिवारों से ज़्यादा सम्पन्न हैं। K ने बताया कि एनपीसी में रहनेवाले पैसेवाले लोगों ने अपने घरों में टाइलें लगवाई हैं और अब वे K के परिवार जैसे अपने घरों में टाइलें न लगा पानेवाले परिवारों के साथ घुलना-मिलना पसन्द नहीं करते। उसने कई ऐसे मुस्लिम परिवारों के बारे में भी बताया जिनको उनके बच्चों का K से बातचीत करना रास नहीं आता था। इसके बावजूद S ने मुसलमानों से काफी नज़दीकी जताई, "मुझे मुसलमान लोग पसन्द हैं... क्योंकि

मैंने उनके साथ नमाज़ पढ़ी है... मुझे यह जाति पसन्द है। क्योंकि मैं उनके साथ रह चुकी हूँ न।" उसने बताया कि उसकी सबसे अच्छी सहेली सहित अन्य मुसलमानों के साथ उसके घनिष्ठ सम्पर्क से उसे यह समझने में मदद मिली कि जब अज़ान पर प्रतिबन्ध लगाने या हिजाब पहनने वाली लड़कियों को स्कूल में प्रवेश न देने की मांग की जाती है तो वे कैसा महसूस करते हैं। "यह ठीक नहीं," उसने कहा।

कविताएँ

इस सन्दर्भ में K और S द्वारा लिखी गई कविताएँ भाईचारे के विचार पर प्रतिक्रिया स्वरूप उभरी थीं। भाईचारे के विचार पर हमने *अपनापन* नाम से चर्चा की थी। अपनापन दूसरों के साथ एक होने की भावना है, जिसमें कोई व्यक्ति एक व्यक्ति के तौर पर और दूसरों के साथ, दोनों ही तरह से अपनेपन की भावना महसूस करे। कविताएँ S और K के निजी और सार्वजनिक जीवन के रोज़मर्रा के दृश्यों का एक चित्र प्रस्तुत करती हैं। ये संक्षिप्त विवरण हमें समुदाय और अपनेपन की पारम्परिक रूप से स्वीकृत धारणाओं पर सोचने के लिए आमंत्रित करते हैं।

लिखने के इस अनुभव का बच्चों के लिए क्या अर्थ हो सकता है? इस प्रक्रिया में वयस्क की क्या भूमिका है? और बच्चों की बात सुनकर हम क्या सीख सकते हैं? इन सवालों पर इस लेख के अगले भाग में विचार किया गया है।

(जारी....)

समीना मिश्रा: नई दिल्ली स्थित एक वृत्तचित्र फिल्म निर्माता, लेखक और शिक्षक हैं, जिनकी बच्चों से सम्बन्धित मीडिया में विशेष रुचि है। वे भारत में अपने पलने-बढ़ने के अनुभवों को दर्शाने के लिए अपने काम में बचपन, पहचान और शिक्षा के लेंस का इस्तेमाल करती हैं।

यह लेख TESF India द्वारा समर्थित उनके रिसर्च प्रोजेक्ट 'हम हिन्दुस्तानी' पर आधारित है।

अँग्रेज़ी से अनुवाद: शहनाज: कुछ सालों तक शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत गैर सरकारी संगठनों के साथ काम करने के बाद, साल 2019 से कॉपी एडिटर और अनुवादक के तौर पर स्वतंत्र रूप से काम कर रही हैं। समाज में मौजूद विभिन्न तरह की असमानताओं से जुड़े विविध पहलुओं को समझने में दिलचस्पी रखती हैं। कानपुर में रहती हैं।

सभी फोटो: समीना मिश्रा।

यह लेख *टीचर प्लस* पत्रिका के अंक जनवरी, 2023 से साभार।